पाठ-5

लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै

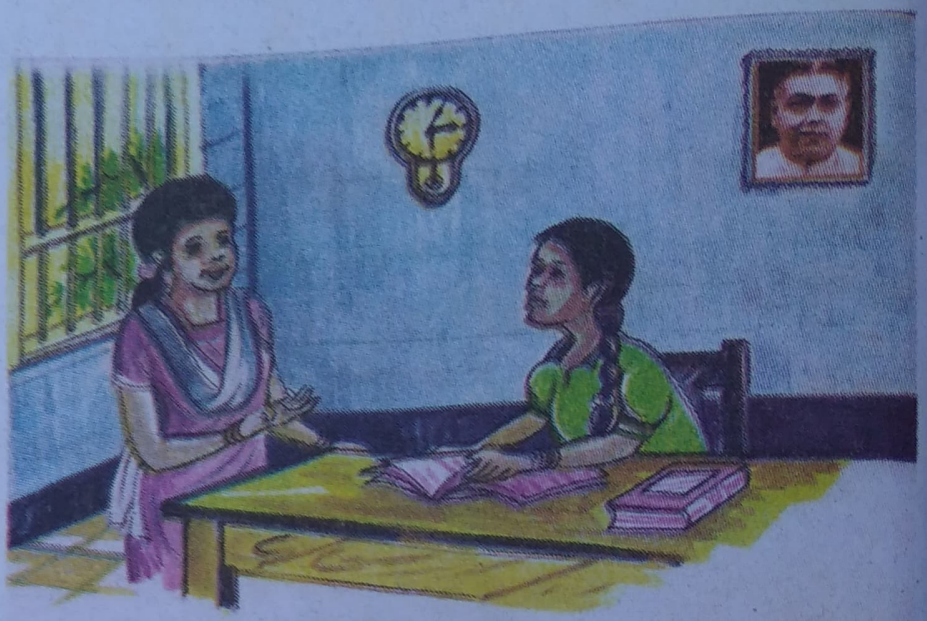

शाम का समय है। बीनू अपने कमरे में बैठी है। वह बहुत परेशान है। उसे असम के किसी महान व्यक्ति पर निबंध लिखना है, पर वह कुछ लिख नहीं पा रही है। उसने दीदी विशाखा को अपनी परेशानी बताई।

विशाखा ने मुस्कराकर कहा- ''मैं तुम्हें एक व्यक्ति के बारे में बताती हूँ। वे महान व्यक्ति हैं- लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै जी। वे असम के प्रथम मुख्यमंत्री तथा राष्ट्रभाषा हिंदी के हितैषी थे। उनका जन्म 6 जून, 1890 को नगाँव जिले के रहा में हुआ था। उनके पिता का नाम डॉक्टर बुद्धेश्वर बरदलै और माता का नाम प्राणेश्वरी देवी था। उनकी प्राथमिक शिक्षा रहा में प्रारंभ हुई। वे एक मेधावी छात्र थे। उन्होंने सन् 1907 में गुवाहाटी के कॉटन कॉलेजिएट स्कूल से प्रथम श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा पास की। उसके बाद कॉटन कॉलेज से उन्होंने आई.ए. की परीक्षा पास की। उच्च शिक्षा के लिए वे कोलकाता गए। वहाँ से उन्होंने बी.ए., एम.ए. और वकालत की उपाधियाँ प्राप्त कीं।''

बीनू ने पूछा- ''दीदी, बरदलै जी की रुचि के बारे में जरा बताइए न!''

''सुनो, मैं बताती हूँ।''

''गोपीनाथ बरदलै एक अच्छे गायक और खिलाड़ी थे। उनकी रुचि नाटक में भी थी। महात्मा गांधी के आह्वान पर वे स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़े थे और उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा था। जेल में ही उन्होंने 'श्रीरामचंद्र', 'बुद्धदेव', 'हजरत मुहम्मद' आदि जीवनी ग्रंथों की रचना की। उनके द्वारा रचित अन्य दो ग्रंथ हैं- 'महात्मा गांधी' और 'अनासक्ति योग'।''

''दीदी, आप उनके वैवाहिक और कर्म-जीवन के बारे में जानती हैं क्या?''

असम की पूर्व राजधानी शिलांग की एक आमसभा को संबोधित करते हुए लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै जी।

विशाखा ने कहा- "उत्तर गुवाहाटी के भूमिकांत शर्मा मजिंदार बरुवा की कन्या श्रीमती सुरबाला बरदलै से उनकी शादी हुई थी। वे सादा जीवन और उच्च विचार के थे। वे हमेशा असमवासियों की भलाई के लिए काम करते थे। असम की जनता उन्हें बहुत चाहती थी, इसलिए उन्हें 'लोकप्रिय' नाम से जाना जाता है।"

"दीदी, बरदलै जी ने हिंदी के लिए क्या-क्या किया था?"

"अच्छा तो यह भी सुनो। बरदलै जी ने 3 नवंबर, 1938 को गुवाहाटी में असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना की थी। वे इस समिति के प्रथम अध्यक्ष थे। उनके प्रयास से सन् 1948 में गुवाहाटी विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।"

"5 अगस्त, 1950 को उनका स्वर्गवास हुआ। भारत सरकार ने सन् 1999 में उन्हें मरणोपरांत 'भारत रत्न' उपाधि से सम्मानित किया।"

"वाह दीदी! आपने बड़े संक्षेप में बरदलै जी का संपूर्ण व्यक्तित्व प्रकट कर डाला! अब मैं इन पर एक सुंदर निबंध लिख सकती हूँ।"

अपने परिवार के साथ बरदलै जी।

आओ, जानें :

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान भारतीय जनता ने हिंदी को 'राष्ट्रभाषा' की पदवी दी थी। वस्तुतः भारतीय संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित हिंदी, असमीया, बांग्ला, तमिल आदि सभी बाईस भाषाएँ राष्ट्रीय भाषाएँ हैं। संविधान के 343वें अनुच्छेद में हिंदी को भारत की **राजभाषा** यानी प्रशासनिक काम-काम की भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया है।

शिक्षण संकेत

इस पाठ में गोपीनाथ बरदलै की संक्षिप्त जीवनी दी गई है। शिक्षक-शिक्षिका इस पाठ को मनोग्राही बनाने के लिए संदर्भ हेतु कुछ अन्य विशिष्ट व्यक्तियों की जीवनियों की ओर विद्यार्थीयों का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। इस पाठ के अंतर्गत संयुक्त वर्णों को सिखाने का प्रयास करें।

अभ्यास-माला

1. आओ, गोपीनाथ बरदलै के बारे में अपने शब्दों में बताएँ।

2. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) पाठ में किस महान व्यक्ति का उल्लेख हुआ है ?

(ख) बरदलै जी की प्राथमिक शिक्षा कहाँ प्रारंभ हुई ?

(ग) गुवाहाटी विश्वविद्यालय की स्थापना कब हुई ?

3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो :

(क) बरदलै जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था ? .....

(ख) उनके माता-पिता के नाम लिखो। .....

(ग) बरदलै जी द्वारा रचित किन्हीं दो ग्रंथों के नाम लिखो। .....

(घ) असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना कब हुई और इसके प्रथम अध्यक्ष कौन थे ? .....

(ङ) बरदलै जी को भारत सरकार ने किस उपाधि से सम्मानित किया ?

.....

4. असम में अनेक स्वाधीनता सेनानी हुए। नीचे कुछ तस्वीरें दी गई हैं। शिक्षक की सहायता से कक्षा इनके बारे में चर्चा करो :

कनकलता बरुवा

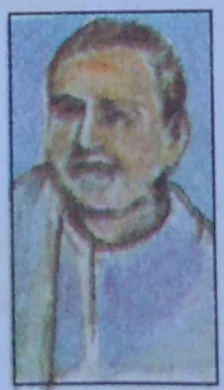

तरुणराम फुकन

चंद्रप्रभा शइकियानी

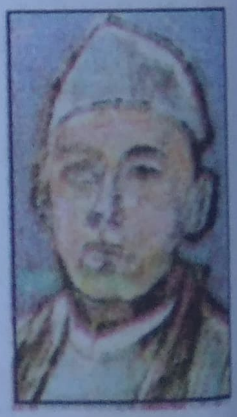

नवीन चंद्र बरदलै

5. एक-एक शब्द लिखो (वृत्त से चुन कर) :

गाना गाने वाला – .....

खेल खेलने वाला – .....

सेवा करने वाली – .....

वकालत करने वाला – .....

हित चाहने वाला – .....

लोगों में प्रिय – .....

6. इन वर्णों से बनने वाले एक-एक शब्द लिखो :

ख – खरगोश,	.....	द – दवा,	.....	फ – फल,	.....
घ – घर,	.....	ध – धरती,	.....	य – यमुना,	.....
छ – छाता,	.....	प – पिता,	.....	ब – वकील,	.....

7. इन्हें पहचानो और याद करो :

झ	श	ह	क्ष	त्र	ज्ञ

8. वृत्त में आए वर्णों से शब्दों को देखो और पढ़ो :

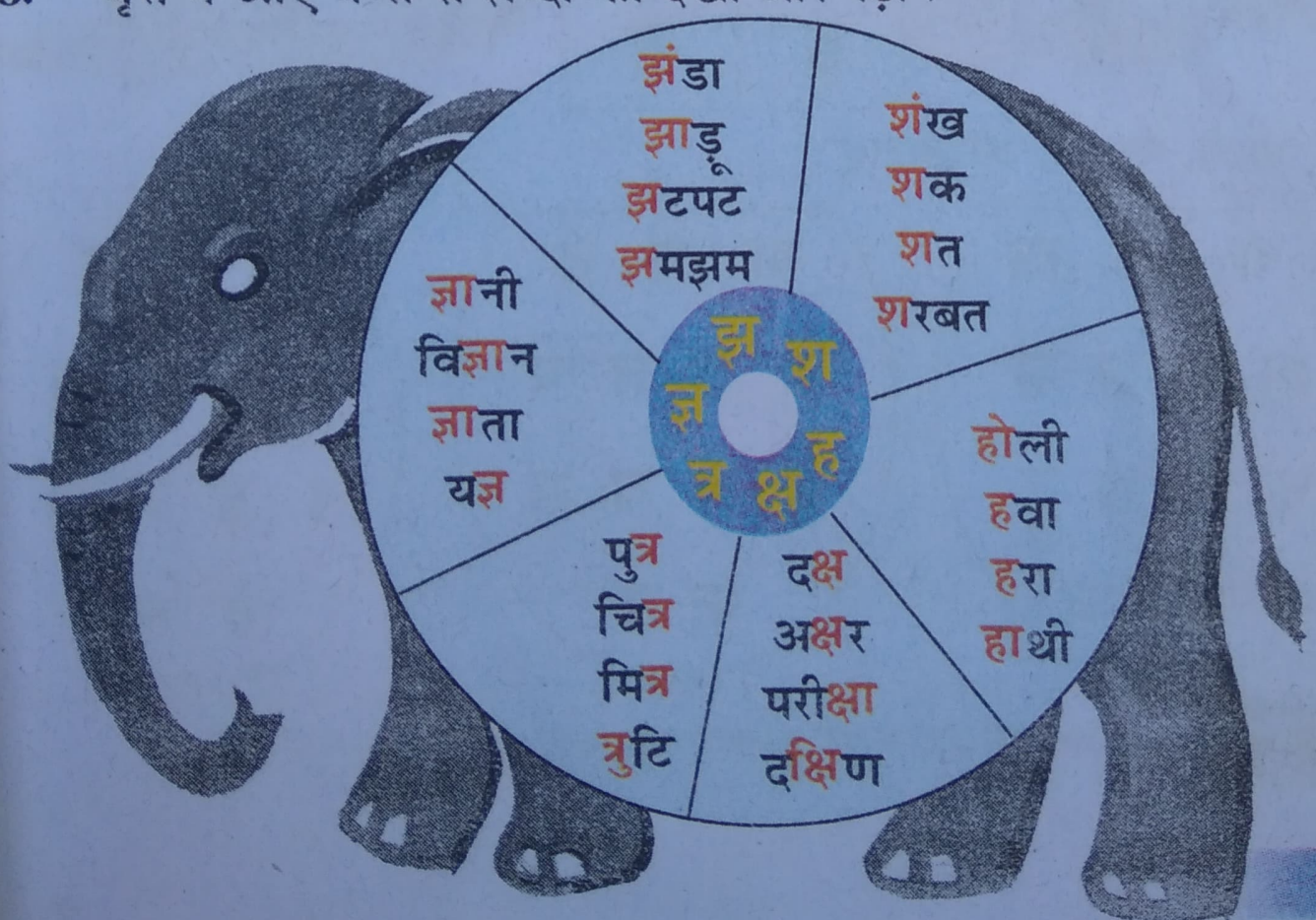

9. आओ, व्यंजन वर्णों को क्रम से पढ़ें :

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म

य	र	ल	व
श	ष	स	ह
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

ड़	ढ़

10. आओ, पहचानें और बताएँ :

ग	ख	क	
श	ङ	ज्ञ	ञ
च	झ	छ	ट
ढ	ज		

ण	न	द	
थ	ध	त	प
ढ़	ब	व	स
फ	र		

भ	घ	ष	
म	ह	क्ष	त्र
ड	ड़	य	श्र
ढ	ल		

शिक्षण संकेत

शिक्षक-शिक्षिका अपने से वर्णों का वृत्त बनाकर बच्चों को वर्ण पहचानने में सहयोग दें।

11. आओ, सही वर्णों से नीचे के चौखटों को भरें :

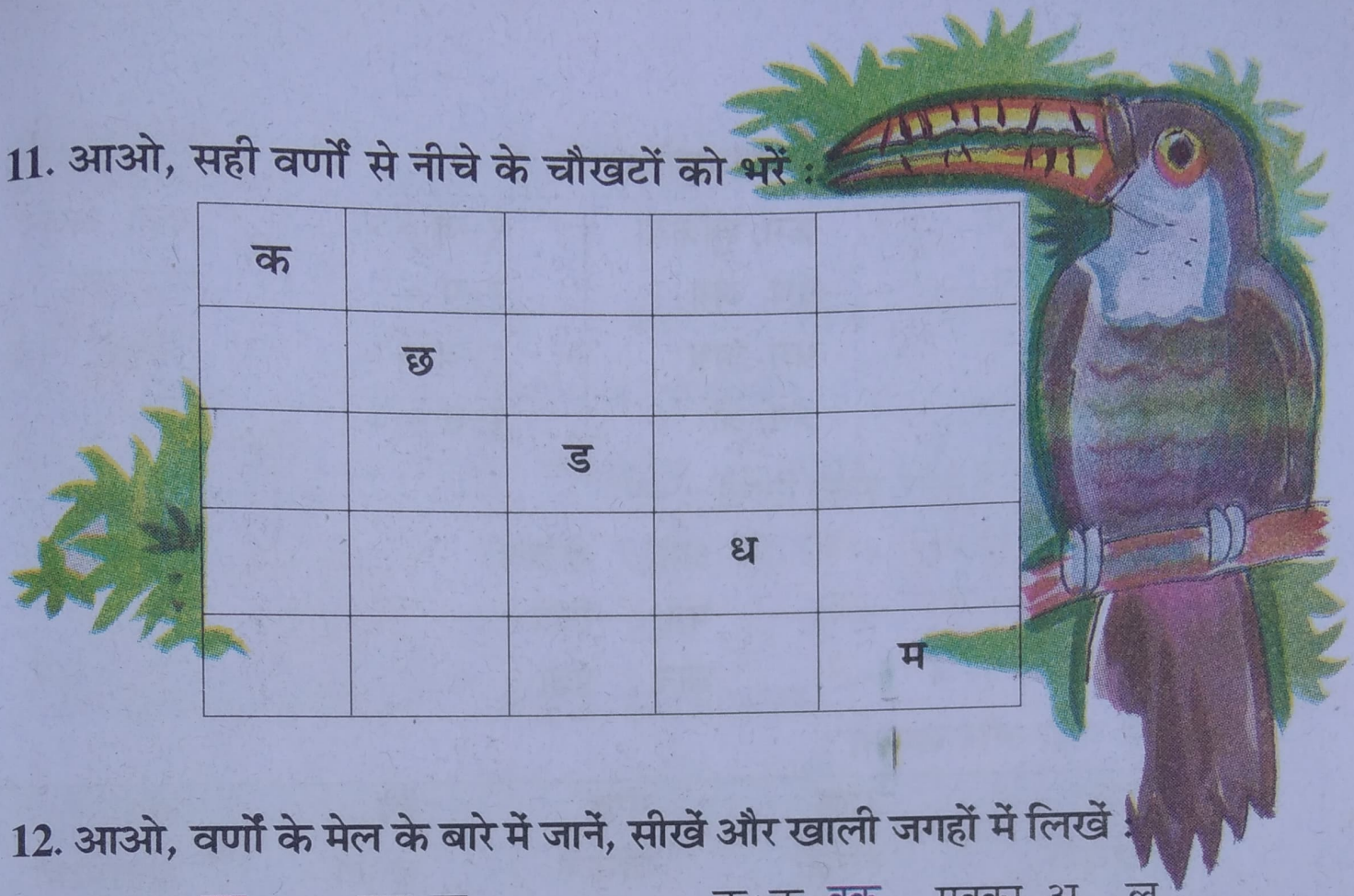

क				
	छ			
		ड		
			ध	
				म

12. आओ, वर्णों के मेल के बारे में जानें, सीखें और खाली जगहों में लिखें :

क्+य=क्य	क्या, वा.....	क्+क=क्क	पक्का, अ....ल
च्+छ=च्छ	अच्छा, म.....र	च्+च=च्च	बच्चा, क.....ा
प्+ल=प्ल	प्लावन, वि.....व	ट्+ट=ट्ट	खट्टा, छु.....ी
स्+त=स्त	पुस्तक, रा.....ा	त्+त=त्त	उत्तर, स.....र
स्+थ=स्थ	स्थान, प्र.....ान	न्+न=न्न	गन्ना, प.....ा
ल्+प=ल्प	संकल्प, क.....ना	प्+प=प्प	चप्पल, ग.....
ब्+द=ब्द	शब्द, अ.....	म्+म=म्म	सम्मान, स.....नीय
ल्+ल=ल्ल	बिल्ली, दि.....ी	स्+स=स्स	रस्सी, गु.....ा

13. इन्हें ऐसे भी लिखा जाता है, ध्यान से देखो और समझो :

ङ्+क = ङ्क	अंक/अङ्क	द्+द = द्द/द्द	उद्देश्य/उद्‌द्देश्य
ञ्+च = ञ्च	अंचल/अञ्चल	द्+व = द्व/द्‌व	विद्वान/विद्‌वान
ण्+ड = ण्ड	झंडा/झण्डा	द्+ध = द्ध/द्‌ध	प्रसिद्ध/प्रसिद्‌ध
न्+त = न्त	अंत/अन्त	ड्+ड = ड्ड/ड्‌ड	अड्डा/अड्‌डा
म्+प = म्प	कंप/कम्प	ट्+ट = ट्ट/ट्‌ट	खट्टा/खट्‌टा

14. इन्हें ध्यान से देखो और याद करो :

क्+र = क्र	क्रम, शुक्रिया	र्+ज = र्ज	दर्जा, अर्जुन
ग्+र = ग्र	ग्रंथ, अग्र	र्+प = र्प	सर्प, दर्प
भ्+र = भ्र	भ्रम, अभ्र	र्+च = र्च	अर्चना, मिर्च
श्+र = श्र	श्रम, श्री	र्+त = र्त	शर्त, मूर्ति

15. आओ, जानें और शब्द लिखें :

क्+ष = क्ष	क्षमा,	क्षत्रिय	....
त्+र = त्र	पत्र,	चित्र	....
ज्+ञ = ज्ञ	ज्ञान,	प्रज्ञा	....

16. इन्हें पढ़ो और समझो :

हंस	अंक	पंख	रंग	संग
अंगूर	लंगूर	जंगल	मंगल	चंदामामा
बाँस	साँस	दाँत	चाँद	गाँव
पाँव	कुआँ	धुआँ	हँसमुख	बकरियाँ

17. आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

परेशान	=	हैरान	स्थापना	=	किसी संस्थान की नींव डालना
स्वाधीनता	=	आजादी			
कूद पड़ना	=	शामिल होना	मरणोपरांत	=	मृत्यु के बाद
वैवाहिक	=	विवाह संबंधी	भलाई	=	उपकार
कन्या	=	बेटी, पुत्री	अध्यक्ष	=	सभापति

आओ, जानें

- "लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै जी की मृत्यु असम और भारत के सार्वजनीन जीवन में कभी न पूर्ण करने वाली शून्यता है।"
  –डॉ. राजेंद्र प्रसाद
- "बरदलै जी स्वराज आंदोलन के एक निर्भीक सेनानी थे। एक साहसी मुख्यमंत्री के रूप में उन्हें असम से जुड़ी विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ा था।"
  –जवाहरलाल नेहरू